SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

xlrdkyhu dk'kh% ,d vè;;u

foÜokl dekj xkre] शोधार्थी, प्रा०भा०इ० एवं पुरातत्व विभाग
cnj vkjk] (Ph.D.) शोध निर्देशिका, प्रा०भा०इ० एवं पुरातत्व विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
foÜokl dekj xkre] शोधार्थी,
प्रा०भा०इ० एवं पुरातत्व विभाग
cnj vkjk] (Ph.D.) शोध निर्देशिका,
प्रा०भा०इ० एवं पुरातत्व विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/03/2023
Revised on : -----
Accepted on : 21/03/2023
Plagiarism : 01% on 14/03/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 1%
Date: Mar 14, 2023
Statistics: 29 words Plagiarized / 2820 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

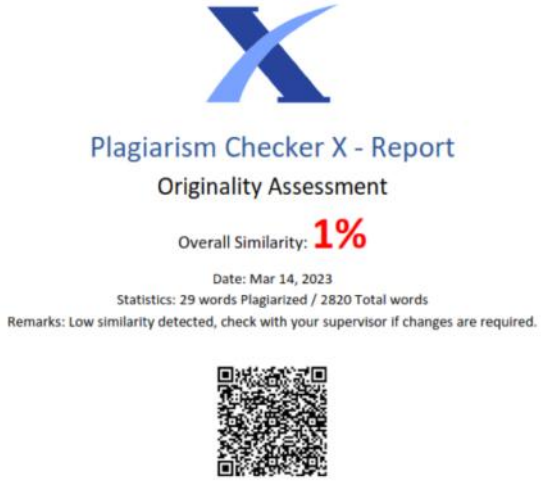

'kks/k lkj

वरुणा नदी के पश्चिम एवं दक्षिण भाग तथा गंगा के बायें तट पर स्थित काशी जिसके अन्य नाम वाराणसी तथा बनारस भी है। इस नगर के नाम के विषय में विद्वानों में बहुत मतभेद है। कुछ विद्वानों नें काशी को वरुणा एवं असि नदियों के मध्य क्षेत्र को माना है, तो कुछ ने वरणावती नदी को वरुणा का प्राचीन नाम और वरणावती का परिष्कृत रूप वाराणसी को माना है। डॉ० मोतीचंद्र के अनुसार' – वरणा शब्द एक वृक्ष का द्योतक है। प्राचीन काल में वृक्षों के नाम पर नगरों के नाम पड़ते थे, जैसे कोशम्ब से कौशाम्बी, रोहीत से रोहीतक इत्यादि। सम्भव है कि वाराणसी और वरणावती दोनों का ही नाम इस वृक्ष विशेष के नाम पर पड़ा है। गुप्त काल में काशी के सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक बिन्दुओं पर प्रकाश डालने हेतु साक्ष्य रूप में हमारे पास साहित्यिक एवं पुरातात्विक विवरण दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। काशी परिक्षेत्र के उत्खनित पुरास्थलों से काशी में गुप्तकालीन विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। इन सभी साक्ष्यों में पुरातात्विक साक्ष्यों की प्रामाणिकता सर्वाधिक मानी गयी है। गुप्तों के काशी क्षेत्र पर अधिकार के समय निर्धारण के लिए कोई पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं किन्तु समुद्रगुप्त के राज्य में बनारस सम्मिलित था क्योंकि राजघाट से उसकी मुद्राएं मिली हैं।' हालांकि समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में काशी विजय का कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसी प्रकार से प्रस्तुत शोध पत्र में गुप्तकालीन राजाओं के शासन एवं उनकी काशी परिक्षेत्र में अवस्थिति का विवेचन करने का प्रयास किया जायेगा।

eq[; 'kCn

xqIr] dk'kh] lL—fr] ijkrRo] ck)] tSu] fgUnq èkeZ-

çLrkouk

काशी की प्राचीनता को साहित्यिक प्रमाणों में वैदिक काल तक और उससे पहले भी माना गया है, किन्तु पुरातात्विक साक्ष्यों से इनकी पुष्टि केवल 8वीं शताब्दी ई० पू० तक ही मानी गयी है। काशी, महाजनपद काल के 16 महाजनपदों में से एक था। इसके पश्चात् मौर्य, कुषाण, गुप्त और निरंतर समय परिवर्तन के साथ गाहड़वाल और मुस्लिम शासकों ने भी इस क्षेत्र में अपना राज्य विस्तार किया। हूण आक्रमण जो भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है उसमें स्कन्दगुप्त ने हूणों को परास्त किया था। हालांकि प्राचीन काशी क्षेत्र के अंतर्गत ही वर्तमान का भीतरी लेख, स्थित स्थान आता था, लेकिन यह युद्ध किस क्षेत्र विशेष में हुआ इसकी जानकारी अस्पष्ट है। प्रस्तुत लेख में हम गुप्तकालीन राजाओं और उनके द्वारा किये गये राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा प्रभावों का अध्ययन करेंगे। वायु पुराण के एक श्लोकः

''अनुगङ्गा प्रयागं च साकेतं मगधस्तथा
एताञ्जनपदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजाः''[3]

इस श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम गंगा की घाटी में प्रयाग से लेकर पाटलिपुत्र तक के क्षेत्र पर शासन करता था। डॉ० जायसवाल इस श्लोक से यह तथ्य निकालते हैं कि ''आरम्भिक गुप्तों की सत्ता प्रयाग में गंगा की ओर अर्थात् अवध–बनारस की तरफ थी, यमुना की तरफ नहीं''।[4] चन्द्रगुप्त प्रथम जिसके शासन की अवधि 305–325 ई० मानी गयी है, चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के साथ हुआ था इसके फलस्वरूप उसे मिथिला राज्य का भी बहुत सहयोग प्राप्त हुआ जो कि उसके साम्राज्य विस्तार को मगध से लेकर प्रयाग तक के भूभाग पर फैलानें में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया होगा। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 ई० में गुप्त संवत् को प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त प्रथम, स्कन्दगुप्त आदि शासकों ने उत्तरोत्तर क्रम में गुप्त वंश की शासन सत्ता को आगे बढ़ाया। वाराणसी जनपद की चंदौली तहसील (वर्तमान में चंदौली जिला) के महाइच परगने के अंतर्गत आने वाले प्रहलादपुर से एक स्तम्भ–उत्कीर्ण लेख प्राप्त हुआ है, यह लेख अति संक्षिप्त केवल एक पंक्ति में, प्रारम्भिक गुप्त कालीन अक्षरों में उत्कीर्ण है। इस लेख में कहा गया है किः यह विपुल विजय, कीर्तिपालक क्षात्र धर्म का रक्षक, राजाओं का सतत् रंजक और पार्थिवों की सेना का पालक था।[5] डॉ० प्लीट नें पार्थिवों से तात्पर्य पहलवों से लगाया है और यह भी एक परिकल्पना की गयी है कि समुद्रगुप्त के काल में उत्तर भारत में शासन करने वाले किसी शासक ने काशी क्षेत्र पर भी आक्रमण किया था। गुप्त काल में बौद्ध, जैन, शैव और वैष्णव सभी धर्मों को समान प्रश्रय मिला क्योंकि धार्मिक आधार पर किसी विरोध या दमन करनें का कोई प्रमाण नहीं मिलता। इस प्रकार गुप्तकाल के प्रमुख राजाओं द्वारा काशी क्षेत्र पर किये गये शासन एवं सांस्कृतिक प्रसार को हम बिन्दुवार विवेचन करेंगे।

'kks/k çfofèk

शोध शीर्षक की विषय वस्तु को दृष्टिगत रखते हुए ऐतिहासिक एवं सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग करते हुए इस शोध पत्र को प्रस्तुत करनें का एक लघु प्रयास किया गया हैं।

mís';

काशी परीक्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न राजवंशों ने शासन सत्ता स्थापित की, यहाँ के संस्कृति को अपनाया, कुछ अपने प्रभाव भी डालें तथा एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में इसको पहचान भी दिलायी। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है कि आम जनमानस तक इन तथ्यों की पहुँच होनी चाहिए कि कैसे काशी नगरी वैदिक काल से लेकर निरंतर विकसित होते हुए एक महाजनपद के रूप में स्थापित हुई और उसी क्रम में इस क्षेत्र पर गुप्त राजाओं ने किस प्रकार की शासन व्यवस्था अपनाई। गुप्तों द्वारा किये गये राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिवर्तनों से इतिहास एवं इतिहास से इतर रुचि रखने वाले लोगों तक भी काशी नगरी के बारे में इस काल विशेष (गुप्तकाल) की स्थिति स्पष्ट करना ही इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य है।

’kkèk i= dh mikn;rk

एक संस्कृति और समाज पर लोगों का प्रभाव पड़ता है तो उसी प्रकार से लोगों पर भी जनमानस पर भी संस्कृति समाज का प्रभाव पड़ता है। गुप्तकालीन काशी में किस क्षेत्रीय लिपि, मुद्रा, धर्म, राजनीतिक व्यवस्था का कितने समय में निरंतर प्रसार हुआ और गुप्त काल की प्राचीन भारतीय इतिहास के भाग के रूप में कितनी प्रासंगिकता है इन सब के बारे में अधिक तथ्यों के संकलन से गुप्तकालीन इतिहास की एवं सुदृढ़ रूपरेखा तैयार होती है। भारतीय इतिहास के स्वर्ण काल के रूप में काशी क्षेत्र स्थित गुप्त वंशावली के प्रमुख शासकों द्वारा किन महत्वपूर्ण कार्यों को किया गया, कैसे शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन सभी मतों, धार्मिक संप्रदायों को प्रश्रय दिया गया तथा एक धर्म सहिष्णु के रूप में शासन किया गया, इन सभी क्रियाकलापों को संक्षेप रूप में प्रस्तुत करना काशी क्षेत्र विशेष के इतिहास में एक कड़ी जोड़ने के समान है। अतः यही विशेषतायें और इनके द्वारा उपार्जित संसाधन तथा विचारधाराओं, मतो, संप्रदायों के लिए गुप्तकालीन शासकों की सकारात्मक सोच को जनमानस तक पहुँचाना इस शोध कार्य की उपादेयता को बढ़ा देता है।

xqIr ’kkldkas dh oa’kkoyh

गुप्त वंश के संस्थापक जिसमें श्री गुप्त 240–280 ई० तथा चन्द्रगुप्त प्रथम को वास्तविक संस्थापक माना गया है। (इसका कार्यकाल 319–356 ई०) इसके पश्चात् समुद्र गुप्त शासक बना जिसका कार्यकाल 350–375 ई० माना गया है। यह एक प्रतापी शासक था जो कवि और संगीत प्रेमी भी था, इसके दरबारी कवि हरिषेण ने प्रथम प्रशस्ति की रचना किया। समुद्रगुप्त के पश्चात् एक शासक रामगुप्त के बारे में भी कहीं–कहीं उल्लेख मिलता है किंतु इसके लिए पुष्ट प्रमाणों की कमी है। अतः चंद्रगुप्त द्वितीय को ही शासक स्वीकार किया गया है जिसका कार्यकाल 375–415 ई० था। इसने बहुतायत मात्रा में स्वर्ण, रजत तथा ताम्र मुद्राएं प्रचलित कराया। इसके पश्चात् कुमारगुप्त प्रथम शासक बना जिसका कार्यकाल 415–455 ई० था। इसने नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण कराया था। इसके पश्चात् गुप्त शासक स्कंदगुप्त शासन संभाला जिसका कार्यकाल 455–67 ई० था। स्कंदगुप्त के पश्चात् गुप्त काल की प्रगति और विकास में ह्रास दृष्टिगत होता है। इसके उत्तराधिकारी निरंतर कमजोर होते गए और अंतिम गुप्त शासक के रूप में विष्णुगुप्त (चंद्रादित्य) का उल्लेख मिलता है जिसका कार्यकाल 550 ई० में समाप्त हुआ और इसी के साथ गुप्त साम्राज्य का भी अस्तित्व समाप्त हो गया।

çkphu dk’kh dk xqIrdkyhu ijko’k"kks ls dk’kh {ks= dk ,frgkfld foopu

काशी क्षेत्र पर गुप्तों के शासन काल के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत के रूप में काशी स्थित ‘राजघाट’ पुरास्थल से प्राप्त मुद्राएं हैं तथा गुप्तकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक इतिहास पर प्रभाव व्यापार और वाणिज्य का भी पड़ा। मंदिरों को भी प्रमुख स्त्रोत के रूप में रखा जाता है। बनारस के गुप्तकालीन राजकर्मचारियों की भी मुद्राएं मिली है और आयात–निर्यात संबंधी मुद्राओं से पता चलता है कि स्कंदगुप्त के समय तक तो बनारस पर गुप्तों का प्रभाव बना रहा।[6] राजघाट से 4 प्रकार की मुद्राएं मिली है इनमें (1) पासपोर्ट (2) देव मंदिरों की मुद्राएं (3) व्यापारियों की मुद्राएं (4) राजकर्मचारियों की मुद्राएं हैं ।

राजघाट से पासपोर्ट संबंधी जो मुद्राएं मिली है उनका अध्ययन श्री कृष्णदेव ने किया है।[7] इन मुद्राओं पर गुप्त शासकों के मुद्राओं की चित भाग के लक्षण दिखायी पड़ते हैं इनमें समुद्रगुप्त के वीणावादक भाँति के सिक्कों के लक्षण, चंद्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी सिक्कों के लक्षण तथा राजघाट से ही कुमारगुप्त की सिंह पराक्रम लक्षण वाली मुद्राएं स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है। चाँदी और ताँबे के सिक्कों पर आने वाले लक्षण भी लिए गये हैं। कुछ मुहरों पर वेदियाँ भी आती हैं जिनकी तुलना स्कंदगुप्त के पश्चिमी प्रांतों के चाँदी के सिक्कों के लक्षणों से की जाती है।[8] इन मुद्राओं का विस्तृत विवेचन करने के पश्चात् श्री कृष्णदेव कहते हैं कि: (1) ये मुद्राएं सर्वसाधारण की ना होकर गुप्त राजाओं की है क्योंकि नागरिक, राजलक्षणों की स्वप्न में भी नकल नहीं कर सकता था। (2) ये मुहरें सिक्के के साँचों से निकाली गयी है जिससे यह पता लगता है कि बनारस में गुप्तों की टकसाल थी। (3) इनके पनालियाँ न होने तथा इनके आँवे में अच्छे से पके होनें के कारण यह पता चलता है कि इसका व्यापार, पासपोर्ट या हुलिया के लिए

होता था। (4) इनमें से एक मुद्रा ऐसी है जो शायद किसी पत्र या दस्तावेज पर लगी थी।[9] राजघाट से मिली कुछ मुद्राओं का अध्ययन वासुदेव शरण अग्रवाल ने किया है, जिसमें राजघाट से मिली अमात्य जनार्दन की मुद्राएं बड़ी संख्या में मिली है। इस पर अंकित लेख के अक्षर प्रारंभिक गुप्तकाल के हैं जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि समुद्रगुप्त के समय बनारस का कार्यभार अमात्य जनार्दन देखते रहे होंगे। राजघाट से अमात्य हास्तिक की भी मुद्राएं मिली हैं जिस पर प्राकृत में 'अमच हस्तिकस' लेख है और दोनों की मुद्राओं पर वृषभ बने हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि काशी का शैवधर्म से संबंध था। राजघाट से दो तरह की मुद्राएं और मिली हैं जिनमें एक तरफ निगम की छाप तथा दूसरी तरफ जनपद की छाप मिलती है। डॉ० मजूमदार ने निगम संबंधी उद्धरणों की जाँच पड़ताल की है।[10] उन्होंने कई अन्य अभिलेखों और मुद्राओं के तुलनात्मक अध्ययन के फलस्वरुप यह निष्कर्ष दिया है कि यह सामूहिक सभा सारे शहर के लिए थी। राजघाट पुरास्थल का चतुर्थ सांस्कृतिक काल चौथी से सातवीं शताब्दी ई० निर्धारित किया गया है।[11]

xIrdkyhu dk'kh dh lkekftd ,oa èkkfeZd fLFkfr

काशी में गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का प्रसार हुआ इनमें बौद्ध, जैन, वैष्णव और शैव धर्म उल्लेखनीय हैं। पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य तो काशी का नाम अविमुक्त क्षेत्र गुप्त युग में ही निर्धारित करतें हैं किन्तु पुराण इसको दिवोदास युग तक ले जाते है। गुप्त काल में काशी क्षेत्र एवं अन्य गुप्त शासित क्षेत्रों में देवताओं की मूर्तियों का व्यापक प्रचलन रहा। इस काल की एक अन्य विशेषता दूसरे धार्मिक संप्रदायों के साथ धार्मिक सहिष्णुता की भावना का होना भी था। इस काल में काशी में पुराणों को अत्यधिक महत्व मिला, अवतारवाद की स्थापना हुई, अनेक दार्शनिक विचारों का जन्म हुआ, धार्मिक भावना को स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला तथा चित्रकला के माध्यम से व्यक्त करना आदि ये सभी विशेषतायें काशी के गुप्तकालीन परिवेश में प्रमुख रूप से उपस्थित थी। गुप्त सम्राटों में अधिकतर वैष्णव थे, लेकिन वे सांप्रदायिक नहीं थे और हिंदू धर्म के अन्य मतों की तरह उनके राज्यकाल में शैव मत भी फलता–फूलता रहा।[12] काशी को एक शैव तीर्थ की मान्यता अधिकांश परवर्ती पुराणों में मिलती है। स्कन्दगुप्त द्वारा भीतरी, वर्तमान गाजीपुर (तत्कालीन वाराणसी) में एक विष्णु प्रतिमा स्थापित करने और पूजा का खर्च चलाने हेतु गाँव दान में देने का वर्णन है। काशी में वैष्णव धर्म का प्रचार–प्रसार होता रहा लेकिन शैव धर्म के व्यापक प्रसार से वैष्णव धर्म का प्रभाव उत्तरोत्तर कम होता गया। मौर्य काल से ही बौद्धों के प्रमुख केंद्र के रूप में काशी का महत्व निरंतर बना रहा जो गुप्त काल में भी स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है। सारनाथ गुप्त काल में बौद्ध मूर्तियों के निर्माण का एक प्रमुख केंद्र था। बौद्ध धर्म के साथ–साथ जैन धर्म का भी प्रसार निरंतर बना रहा। काशी में जैन धर्म के 4 तीर्थंकरों, सुपार्श्व, चंद्रप्रभु, श्रेयांस और पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था इसलिए भी यह स्थल जैन परंपरा के लिए विशेष महत्व का रहा है। सारनाथ गुप्तकाल में प्रमुख रूप से बौद्ध शिक्षा के केंद्र के लिए प्रसिद्ध था जहां पर नेपाल एवं श्रीलंका आदि स्थानों से छात्र अध्ययन के लिए आते थे। राजघाट से ऋषभदेव नाम के एक व्यक्ति की मुद्रा से यह पता चलता है कि वाराणसी में गुप्तकाल में जैन मतावलम्बी निवास करते थे।[13] पहाड़पुर से प्राप्त गुप्त संवत् 158 (479 ई०) का एवं ताम्रपत्र महत्वपूर्ण है।[14] इस लेख में पुंड्रवर्धन के अधिकरण अधिष्ठान के पास एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी द्वारा तीन दीनारों के जमा किए जाने का उल्लेख है। जिसके द्वारा कुछ जमीन खरीद कर उसकी आमदनी से वट बिहार की जैन प्रतिमाओं का पूजन हो सके इस विहार का प्रबंध आचार्य गुहनंदिन के शिष्य–प्रशिष्य करते थे। उपर्युक्त गुहनंदी काशी के थे और पंचस्तूपान्वी थे, अर्थात् काशी में भी मथुरा के पंचस्तूपान्वय की शाखा पाँचवी शताब्दी में थी।[15] शिल्प कला के रूप में मूर्ति–शिल्प कला का अनुपम उदाहरण स्पष्ट देखने को मिलता है इनमें पूर्व कालीन शासकों जैसे मौर्यों, कुषाणों के समय से चली आ रही शिल्प कला गुप्तकालीन काशी में भी देखने को मिलती है। गुप्त काल में मूर्तिकला का प्रमुख केंद्र मानव आकार है। गुप्त युग में काशी शिक्षा का एक बड़ा केंद्र था। राजघाट से कुछ मुद्राएं मिली है जिसके आधार पर काशी की शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। चातुर्विद्यावली गुप्तकालीन मुद्रा से यह पता चलता है कि उस काल में बनारस में चारों वेद पढ़ाने के लिए कोई पाठशाला थी।[16] गुप्त युग में सामवेद को पढ़ाने के लिए स्थापित किसी विशेष पाठशाला का उल्लेख भी विद्वानों द्वारा किया गया है लेकिन इसके स्पष्ट प्रमाण नहीं है। राजघाट से मिली 'श्री सर्वविद्यस्य'

लेखवाली गुप्तकालीन मुद्रा के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि काशी में शायद त्रैविद्य नाम के किसी शिव मंदिर साथ पाठशाला में तीनों वेदों के पढ़ाने का भी प्रबंध था। गुप्त युग में काशी में मलमल के सूक्ष्म एवं पारदर्शी कपड़ों के निर्माण संबंधी पुरातात्विक प्रमाण भी मिलते हैं। सारनाथ पुरास्थल की खुदाई से प्राप्त गुप्तयुगीन बुद्ध की खड़ी प्रतिमा के सूक्ष्मावलोकन से विदित होता है कि गुप्त काल में बनारस में अत्यंत महीन एवं पारदर्शी कपड़े बनते थे क्योंकि सम्मान और श्रद्धा के कारण बुद्ध को वही वस्त्र पहनाया जाना स्वाभाविक है जो उत्तम कोटि का हो।[17] इस प्रकार के उच्च कोटि के वस्त्रों के प्रमाण गुप्तकालीन समृद्धि को भी व्यक्त करने के महत्त्वपूर्ण स्त्रोत हैं।

fu"d"k

मोक्षनगरी काशी के विशेष कालखण्ड में गुप्त राजवंश द्वारा किए गए क्रियाकलापों और विविध सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक उत्थान एवं परिवर्तन को विभिन्न ऐतिहासिक साहित्यिक साक्ष्यों, पुरातात्विक साक्ष्यों के द्वारा एक क्रमिक रूपरेखा बनाते हुए इस शोध पत्र के माध्यम से गुप्त साम्राज्य का काशी पर प्रभाव तथा उनकी विशेषताओं का विशद् विवेचन करने का प्रयास किया गया है। उपरोक्त सभी प्रमुख बिंदुओं पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य निकल कर आता है कि काशी नगरी विभिन्न काल खंडों में अनेकों राजवंशों के शासनकाल में सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता के भाव को अंदर समेटे हुए अपने वर्तमान स्वरूप में भारतीय भू–क्षेत्र के अंतर्गत विद्यमान हैं। काशी में गुप्त काल में हमें विदेशी आक्रमण के भी प्रमाण मिले हैं जिनमें हूणों का आक्रमण प्रमुख रूप से था और स्कंदगुप्त ने उसका प्रतिकार किया। विभिन्न प्रकार की मुद्राएं मिलना साम्राज्य की धन वैभव स्थिति को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि गुप्तकालीन काशी में एक समृद्ध साम्राज्य का निवास था और लोगों का जीवन स्तर भी उन्नत अवस्था में था।

lanHk lwph

1. मोतीचन्द्र, *काशी का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1962, पृष्ठ – 04।
2. मोतीचन्द्र, *काशी का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1962, पृष्ठ – 66।
3. वायुपुराण, 29/386।
4. जायसवाल, के० पी० उल्लिखित, पृ० – 123।
5. प्लीट, गुप्त इंसक्रिप्शन्स, पृ० – 250 – 251।
6. मोतीचन्द्र, *काशी का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1962, पृष्ठ – 70।
7. जे० एन० एस० आई० 3 (दिसम्बर,1941) भाग – 2 पृष्ठ – 74–77।
8. मोतीचन्द्र, *काशी का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1962, पृष्ठ – 72।
9. जे० एन० एस० आई० 3 (दिसम्बर,1941) पृष्ठ – 76।
10. मजूमदार, कार्पोरेट लाइफ इन ऐजेंट इंडिया, पृष्ठ – 144, कलकत्ता, 1922।
11. नारायण, ए० के० एवं टी० एन० राय, ऐक्सकेवेशन ऐट राजघाट, खण्ड–1, पृष्ठ –631।
12. सिंह, अनुराधा, *प्राचीन काशी का इतिहास एवं संस्कृति,* लुमिनस बुक्स, वाराणसी, 2015, पृष्ठ –97।
13. सिंह, अनुराधा, *प्राचीन काशी का इतिहास एवं संस्कृति,* लुमिनस बुक्स, वाराणसी, 2015, पृष्ठ –100।
14. एपिग्राफिया, इंडिका, 20/59।
15. प्रेमी, पं० नाथूराम, *अभिनंदन ग्रंथ,* पृष्ठ – 246–48।
16. मोतीचन्द्र, *काशी का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1962, पृष्ठ – 77।
17. विश्वकर्मा, ईश्वर शरण, *काशी का ऐतिहासिक भूगोल,* रामानंद विद्या भवन, वाराणसी, 1987, पृष्ठ – 152।

****